e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in

SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 13, Issue 4, April 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.423

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 4, April 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1304463 |

मुगल–राजपूत संबंध – इतिहास और प्रभाव

चतरा राम मेघवाल

सहायक आचार्य, इतिहास

सारांश

भारत में मुगल वंश का शासन 1526 ई. से प्रारम्भ होता है। जब पानीपत के प्रथम युद्ध में मुगल शासक बाबर ने दिल्ली सल्तनत के सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराया। भारत में मुगल वंश का शासन 1526 ई. से 1857 ई. तक रहा। इस काल में सभी मुगल शासकों ने राजपूती रियासतों के भिन्न–भिन्न प्रकार के सम्बन्ध स्थापित किये। बाबर एवं राणा–सांगा के मध्य वर्चस्व की लड़ाई थी तो अकबर सुलह–ए–कुल नीति एवं वैवाहिक सम्बन्धों को स्थापित कर राजपूती शासकों के साथ सम्बन्ध स्थापित किए। पहली रियासत आमेर थी जिसके शासक राव भारमल ने मुगलों की अधीनता को स्वीकार कर लिया। मुगल सम्राट जहाँगीर की मृत्यु के बाद जगत गुसाई का पुत्र शहजादा खुर्रम शाहजहाँ के नाम से मुगल बादशाह बना। शाहजहाँ के काल मे आमेर के महाराजा मिर्जा राजा जयसिंह, जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह, बीकानेर के महाराजा करणी सिंह, उदयपुर के महाराणा राजसिंह ने मुगलों का पूर्ण समर्थन एवं सहयोग दिया था। बूँदी राव क्षत्रुशाल की मृत्यु के बाद उनके छोटे पुत्र राव माधो सिंह को बूँदी को कोटा से अलग कर कोटा का स्वतंत्र राजा बना दिया। चूँकि उस समय के राजस्थान को राजपूताने के नाम से जाना जाता था तथा इस की सभी रियासते विशेषकर मेवाड़ अपने स्वाभिमान के लिए जानी जाती थी। यदि दूसरे संदर्भ में देखा जाए तो एक सत्य यह भी निकलकर सामने आता है की मुग़ल साम्राज्य जो उस समय का अजेय साम्राज्य माना जाने लगा था, परन्तु उसे भी मेवाड़ में विद्रोह का सामना करना पड़ा था, तथा राणा प्रताप ने मुग़ल राजाओ की अधीनता जीवन पर्यन्त नहीं स्वीकारी। इस आलेख में, हम मुगल–राजपूत संबंधों की विस्तृत चर्चा करेंगे और उनके सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक प्रभावों की जांच करेंगे।

मूल शब्द : मुगल वंश, मध्यकालीन इतिहास, मुगल–राजपूत संबंध

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 4, April 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1304463 |

प्रस्तावना :

भारत के मध्यकालीन इतिहास में मुगलों और राजपूतों के बीच संबंधों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 16वीं और 17वीं सदी के दौरान मुगल साम्राज्य और राजपूतों के बीच गठबंधन, संघर्ष, और सहयोग की जटिलता ने भारतीय इतिहास को गहराई से प्रभावित किया। मुग़ल साम्राज्य को यदि विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से देखे तो हम पाते है की समय समय पर शासन करने वाले विभिन्न मुग़ल राजाओ में से कुछ एक में निरंकुशता पायी जाती है, जिसमे औरंगजेब को उदाहरणतः लिया जा सकता है। परन्तु सभी मुग़ल सम्राट निरकुंश एवं अत्याचारी थे ऐसा कहना भी गलत होगा। उदाहरणतः यदि मुग़ल शासक अकबर के शासनकाल की तुलना इसके बाद के मुग़ल सम्राटों यथा जहांगीर, शाहजहां, औरंगजेब इत्यादि से करें तो ऐतिहासिक तथ्य बतातें है की अकबर की नीतियां समस्त समाजो के प्रति निरंकुशकारी ना होकर कल्याणकारी थी तथा अकबर के समस्त शासनकाल के दौरान कई बार ऐसा समय आया जब विभिन्न राजाओं ने उसकी कल्याणकारी नीतियों को देखकर सहर्ष उसके साथ संधि कर मुग़ल साम्राज्य के विस्तार में सहयोग किया। *ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो मुग़ल जो की उस समय का एक विशाल एवं वृहत साम्राज्य था, तथा यह एकमात्र ऐसा साम्राज्य था जिसने 150 वर्षो से भी अधिक समय तक भारत पर शासन किया । परन्तु सूक्ष्मता से देखने पर यह स्पष्ट होता है की सभी मुग़ल सम्राटों को देश के अन्य राज्यों को अपने अधीन करने एवं उन्हें विजय करने में इतनी अधिक मेहनत नहीं करनी पड़ी जितनी राजस्थान राज्य के राजाओं को अधीन करने में करनी पड़ी । साथ ही विशेषकर मेवाड़ के संदर्भ में देखा जाए तो यह पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता है की मुग़ल राजाओ ने इस रियासत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था।*

प्रारंभिक संपर्क और संघर्ष :

मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर द्वारा 1526 में पानीपत की पहली लड़ाई के बाद हुई। इसके बाद मुगलों और राजपूतों के बीच कई संघर्ष हुए, जो प्रारंभिक संपर्कों को चिह्नित करते हैं।

- **बाबर और राजपूत** – बाबर ने 1527 में खानवा की लड़ाई में मेवाड़ के राणा सांगा को हराया। यह लड़ाई मुगलों और राजपूतों के बीच प्रारंभिक संघर्षों में से एक थी। इस जीत ने मुगलों को उत्तर भारत में अपनी पकड़ मजबूत करने में मदद की और राजपूतों को मुगल सत्ता की शक्ति का एहसास कराया।
- **हुमायूँ और शेरशाह सूरी** – हुमायूँ के शासनकाल में राजपूतों के साथ संबंध जटिल थे। शेरशाह सूरी के सत्ता में आने के बाद राजपूतों के साथ संबंध तनावपूर्ण हो गए, क्योंकि शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को हराकर भारत पर अपना शासन स्थापित किया।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 4, April 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1304463 |

अकबर का दौर– गठबंधन और सहयोग :

अकबर (1556–1605) ने मुगल–राजपूत संबंधों में नया मोड़ लाया। उन्होंने राजपूतों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का प्रयास किया और विभिन्न गठबंधनों का निर्माण किया।

- **राजनीतिक विवाह** – अकबर ने राजपूत राजकुमारियों से विवाह करके अपने साम्राज्य को मजबूत किया। 1562 में, अकबर ने आमेर के राजा भारमल की बेटी जोधाबाई से विवाह किया, जिसने मुगलों और राजपूतों के बीच एक स्थायी गठबंधन की नींव रखी। यह विवाह न केवल दो राजवंशों को एकजुट करता था, बल्कि इससे धार्मिक और सांस्कृतिक मेलजोल भी बढ़ता था।
- **मान सिंह और राजपूत सेना** – अकबर ने राजा मान सिंह को अपने दरबार में महत्वपूर्ण स्थान दिया और उन्हें उच्च पदों पर नियुक्त किया। मान सिंह ने अकबर की सेनाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और विभिन्न अभियानों में हिस्सा लिया, जैसे कि बंगाल और अफगानिस्तान के अभियानों में। मान सिंह की वफादारी और नेतृत्व कौशल ने मुगलों और राजपूतों के बीच विश्वास को बढ़ावा दिया।
- **राजपूतों की स्वायत्तता** – अकबर ने राजपूत राज्यों को स्वायत्तता दी और उन्हें अपने साम्राज्य के अधीनस्थ राज्य के रूप में मान्यता दी। राजपूत शासक अपने क्षेत्रों में स्वतंत्रता से शासन कर सकते थे, बशर्ते वे मुगलों के प्रति निष्ठावान रहें और समय–समय पर कर अदा करें। इस स्वायत्तता ने राजपूत शासकों को अपनी पारंपरिक शासन प्रणाली को बनाए रखने की अनुमति दी।

जहाँगीर और शाहजहाँ का दौर – स्थिरता और सुलह :

अकबर के बाद, जहाँगीर (1605–1627) और शाहजहाँ (1628–1658) के शासनकाल में मुगल–राजपूत संबंध स्थिर और सौहार्दपूर्ण बने रहे।

- **जहाँगीर और अमर सिंह** – जहाँगीर ने मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह के साथ संधि की, जिसने मेवाड़ को मुगलों की अधीनता स्वीकार करने पर मजबूर किया, लेकिन उन्हें स्वायत्तता और सम्मान भी प्रदान किया। इस संधि ने मेवाड़ और मुगलों के बीच शांति और सहयोग की नींव रखी।
- **शाहजहाँ और राजपूत** – शाहजहाँ ने राजपूतों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखा और उन्हें मुगल दरबार में उच्च पदों पर नियुक्त किया। उदाहरण के लिए, राजा जसवंत सिंह को उच्च सैन्य पद पर नियुक्त किया गया। शाहजहाँ के शासनकाल में राजपूतों ने मुगल अभियानों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उनकी वफादारी ने साम्राज्य की स्थिरता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 4, April 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1304463 |

औरंगजेब का दौर – तनाव और संघर्ष :

औरंगजेब (1658–1707) के शासनकाल में मुगल–राजपूत संबंधों में तनाव और संघर्ष बढ़ा। औरंगजेब की धार्मिक नीतियों और विस्तारवादी अभियानों ने राजपूतों को असंतुष्ट कर दिया।

- **मेवाड़ और मराठा संघर्ष** – औरंगजेब ने मेवाड़ और मराठा शासकों के खिलाफ कठोर नीतियाँ अपनाईं, जिससे मुगल–राजपूत संबंध बिगड़ गए। महाराणा राज सिंह और महाराणा जय सिंह ने औरंगजेब की नीतियों का विरोध किया और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। इस संघर्ष ने मुगल साम्राज्य को कमजोर किया और राजपूतों की स्वतंत्रता की भावना को मजबूत किया।
- **राजपूत विद्रोह** – औरंगजेब के खिलाफ राजपूतों ने विद्रोह किया, जिससे मुगल साम्राज्य को काफी नुकसान हुआ। जोधपुर और मेवाड़ के राजपूतों ने मुगलों के खिलाफ संघर्ष किया और अपनी स्वायत्तता की रक्षा की। इन विद्रोहों ने मुगल साम्राज्य की स्थिरता को चुनौती दी और उसकी सीमाओं को कमजोर किया।

सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव :

मुगल–राजपूत संबंधों ने भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला।

- **वास्तुकला और कला** – मुगलों और राजपूतों के गठबंधन ने वास्तुकला और कला में समृद्धि लाई। मुगल शैली और राजपूत शैली का संयोजन विभिन्न महलों, किलों, और मकबरों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, आमेर का किला और जोधपुर का मेहरानगढ़ किला। इन संरचनाओं में दोनों संस्कृतियों की विशिष्टताओं का मिश्रण देखा जा सकता है, जिससे एक अद्वितीय स्थापत्य शैली का विकास हुआ।
- **धार्मिक सहिष्णुता** – अकबर के शासनकाल में धार्मिक सहिष्णुता और बहुलवाद को प्रोत्साहित किया गया। अकबर ने ष्दीन–ए–इलाहीष की स्थापना की, जो विभिन्न धर्मों के तत्वों का संयोजन था। इसने हिंदू–मुस्लिम सांस्कृतिक मेलजोल को बढ़ावा दिया और समाज में धार्मिक सहिष्णुता की भावना को मजबूत किया।
- **साहित्य और संगीत** – मुगलों और राजपूतों के गठबंधन ने साहित्य और संगीत में भी योगदान दिया। मुगल दरबार में राजपूत कवियों और संगीतकारों को प्रोत्साहित किया गया। इस सांस्कृतिक संगम ने भारतीय साहित्य और संगीत को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। कई प्रसिद्ध कवियों और संगीतकारों ने इस समय के दौरान अपनी कृतियों को रचा, जो आज भी महत्वपूर्ण मानी जाती हैं।

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.423| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 13, Issue 4, April 2024 ||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2024.1304463 |

निष्कर्ष

मुगल–राजपूत संबंधों ने भारतीय इतिहास को गहराई से प्रभावित किया। यह संबंध संघर्ष, सहयोग, और सांस्कृतिक समृद्धि की कहानी है। मुगल–राजपूत गठबंधन ने न केवल राजनीतिक स्थिरता प्रदान की बल्कि भारतीय समाज और संस्कृति को भी समृद्ध किया। इन संबंधों का अध्ययन हमें उस समय की जटिलताओं और विविधताओं को समझने में मदद करता है और आज भी हमारे समाज और संस्कृति में उनकी गूंज महसूस की जा सकती है। मुगल–राजपूत संबंधों की गहनता और जटिलता ने भारतीय उपमहाद्वीप की सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनीतिक धारा को बदल दिया। यह संबंध भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जो विभिन्न युगों में बदलते परिदृश्यों और परिस्थितियों के बावजूद स्थिर और प्रभावशाली रहा।

References:

1. Ali, M. Athar. "The Mughal Nobility Under Aurangzeb". Oxford University Press, 1997.
2. Chandra, Satish. "Medieval India: From Sultanat to the Mughals". Vol. 2, Har-Anand Publications, 2005.
3. Richards, John F. "The Mughal Empire". Cambridge University Press, 1993.
4. Habib, Irfan. "The Agrarian System of Mughal India 1556-1707". Oxford University Press, 1999.
5. Sarkar, Jadunath. "A History of Jaipur 1503-1938". Orient Longman, 1984.
6. Singh, Ramya. "Rajasthan: A Concise History". Oxford University Press, 2008.
7. Rizvi, S. A. A. "Religious and Intellectual History of the Muslims in Akbar's Reign". Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd., 1975.
8. Lal, Ruby. "Domesticity and Power in the Early Mughal World". Cambridge University Press, 2005.
9. Asher, Catherine B. "Architecture of Mughal India". Cambridge University Press, 1992.
10. Schimmel, Annemarie. "The Empire of the Great Mughals: History, Art and Culture". Reaktion Books, 2004.

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com